चौहान वंश

- 7–12 वी शताब्दी का युग राजपूत युग कहा जाता है

चौहान की उत्पत्ति के मत

- अग्निकुंड –
  - चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो ग्रंथ) के अनुसार वशिष्ठ ऋषि ने अग्निकुंड से चार यौद्धा उत्पन किये – गुर्जर प्रतिहार, परमार, चालुक्य(सौंलकी), चौहान (चाहमान)
  - मुहणौत नैंणसी, सूर्यमल्ल मिश्रण ने इसका समर्थन किया
- सूर्यवंशी –
  - पृथ्वीराज विजय, हमीर महाकाव्य, हम्मीर रासो ग्रंथ व पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार सूर्यवंशी थे
- चंद्रवंशी मत –
  - हाँसी शिलालेख, अचलेश्वर मंदिर का लेख
- इंद्र के वंशज –
  - रायपाल का सेवाडी (पाली) अभिलेख
- विदेशी मत –
  - शक सिथियन – कर्नल जेम्स टॉड + विलियम क्रुक
  - हूणो – वी. ए. स्मिथ
  - कुषाण (यू – ची) – अलेक्जेण्डर कनिघम (ब्रोचगुर्जर ताम्रपत्र 678 ई आधार पर)
- वैदिक आर्यो की संतान (विशुद्ध भारतीय) –
  - सी.वी.वैध + गौरीशंकर हीराचंद ओझा
- ब्राह्मण मत –
  - गोपीनाथ शर्मा (बिजोलिया शिलालेख के अनुसार वत्स गोत्र ब्राह्मण बताया) + डॉ. दशरथ शर्मा (ग्रंथ – अर्ली चौहान डायनेस्टी) + डी.आर. भंडारकर +कायम खा रासो ग्रंथ (रचयिता – जान कवि) के अनुसार

सांभर/अजमेर के चौहान

- चौहानो का मूल स्थान सपादलक्ष (सांभर के आस पास) था
- इन्हें शाकम्भरी (सांभर) के चौहान(चाहमान) कहा गया
- चौहानो ने प्रारंभिक राजधानी – अहिच्छत्रपुर (नागौर) को बनाया, इसके बाद क्रमशः सांभर व अजमेर को राजधानी बनाया था

❖ वासुदेव चौहान – 551 ईस्वी

- चौहान वंश का संस्थापक / आदि पुरुष / मूलपुरूष
- बिजोलिया शिलालेख के अनुसार – वत्स गोत्र का ब्राह्मण बताया जिसने साम्भर झील का निर्माण कराया
- राजधानी – अहिच्छत्रपुर को बनाया

नोट – प्रारंभ में चौहान गुर्जर प्रतिहारों के सांमत थे परंतु गुवक प्रथम ने इनकी अधीनता अस्वीकार कर दी

❖ गुवक प्रथम –

- दुर्लभराज का पुत्र था
- प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय का सामंत था
- हर्षनाथ मंदिर (सीकर) का निर्माण कराया

नोट– हर्षनाथ जी चौहानों के ईष्टदेव / अराध्यदेव है

❖ चंदनराज –

- इनकी पत्नी रूद्राणी पुष्कर झील में प्रतिदिन 1 हजार दीपक जलाकर महादेवजी की उपासना करती थी

❖ सिंहराज –

- महाराजाधिराज की उपाधि धारण की

❖ विग्रहराज द्वितीय –

- प्रारंभिक चौहान शासको में सबसे प्रतापी शासक
- अहिलवाडा के चालुक्य शासक मूलराज प्रथम को हराया तथा भडोच (गुजरात) में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता का मंदिर बनाया

❖ गोविंदराज तृतीय –

- पृथ्वीराज विजय मे इन्हें वैरीघट्ट (शत्रु संहारक) कहा गया
- गजनी के शासकों को मारवाड़ में आगे बढ़ने से रोका था

❖ चामुंडराज –

❖ दुर्लभराज तृतीय –

❖ विग्रहराज तृतीय –

❖ पृथ्वीराज प्रथम –

- अजयराज के पिता
- पृथ्वीराज विजय ग्रंथ (रचयिता – जयानक) में बताया गया है कि इन्होंने 700 चालुक्य को मार डाला था जो पुष्कर में ब्राह्मणों को लूटने आये थे ।

❖ अजयराज चौहान (1105–1133 ई) –

- 1113 ई में अजयमेरू (अजमेर) की स्थापना कर अजमेर को राजधानी बनाया
- अजयदेव / अजयप्रिय नाम से चाँदी के सिक्के चलाये, पृथ्वी को चाँदी के सिक्कों से भर दिया था
- सिक्कों पर इनकी रानी सोमलदेवी का भी नाम मिलता है

❖ अर्णोराज / अनाजी –(1133–1155 ई)

- तुर्क आक्रमणकारियों को खदेड़ा और मालवा के नरवर्मन को पराजित किया
- इस स्थान को शुद्ध करने के लिए हवन कराया और चंद्रा नदी का जल रोककर 1137 ई में आनासागर झील का निर्माण कराया
- पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण कराया

- देवबोध , धर्मघोष इनके दरबारी विद्वान थे
- परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उपाधि धारण की
- चालुक्य शासक कुमारपाल ने इनको आबू के युद्ध में हरा दिया था, इस युद्ध का वर्णन प्रबंध चिंतामणि (लेखक – मेरूतंग) व प्रबंध कोष (लेखक – राजशेखर) में मिलता है
- चालुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज की पुत्री कंचन देवी से विवाह किया

- हत्या – बेटे जगदेव चौहान ने की (चौहानों का पितृहंता)
- अर्णोराज के चार पुत्र जग्गदेव, विग्रहराज चतुर्थ, अपरगांगेय, सोमेश्वर चारो शासक बने
- बिजौलिया अभिलेख में सोमेश्वर की उपाधि प्रताप लंकेश्वर मिलती है

❖ विग्रहराज चतुर्थ / बिसलदेव चौहान (1158 – 1163 ई)

- गजनी के शासक अमीर खुशरूशाह व दिल्ली के तोमर शासक तंवर को पराजित किया व दिल्ली पर अधिकार किया
- दिल्ली पर अधिकार करने वाला प्रथम चौहान शासक
- इनका काल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहलाता है

● प्रमुख ग्रंथ –

- ललित विग्रहराज – यह ग्रंथ दरबारी कवि सोमदेव द्वारा लिखा गया जिसमें विग्रहराज – देसलदेवी की प्रेम कहानी का काल्पनिक वर्णन मिलता है
- बिसलदेव रासो – दरबारी कवि नरपति नाल्ह द्वारा रचित ग्रंथ जिसमें बिसलदेव – राजमति की प्रेम कहानी मिलती है
- संस्कृत में हरकेली नाटक की रचना की
- इनके समय दिल्ली शिवालिक स्तम्भ अभिलेख (1163 ई) उत्कीर्ण हुआ जिसमें जानकारी मिलती है कि विग्रहराज चतुर्थ ने मलेच्छो को बार बार पराजित किया
- अजमेर में संस्कृत पाठशाला (सरस्वती कंठाभरण) का निर्माण कराया जिसे मोहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1198 ई में तोड़कर अढाई दिन के झोपड़े (मस्जिद) में बदल दिया, यहाँ पंजाब शाह पीर का ढाई दिन का उर्स लगता है यह राजस्थान की प्रथम / प्राचीन मस्जिद है

- कवि / विद्वानों का आश्रयदाता होने के कारण इन्हें कवि बांधव (जयानक भट्ट ने कहा) कहते हैं
- जाबालिपुर का नाम ज्वालापुर कर दिया
- टोंक जिले में बीसलपुर कस्बा व बिसलसागर बाँध का निर्माण कराया

❖ पृथ्वीराज चौहान द्वितीय –

- इनकी रानी सुहवदेवी ने मेनाल में सहुवेश्वर शिव मंदिर का निर्माण कराया

❖ पृथ्वीराज चौहान तृतीय (1177–1192 ई)

- जन्म – 1166 ई – अहिलपाटन (गुजरात)
- पिता – सोमेश्वर
- माता – कर्पूरी देवी
- सेनाध्यक्ष – भुवनमल्ल
- मुख्यमंत्री –कदम्बवास / कैमास (पृथ्वीराज का परामर्श मंत्री भी था)

- पृथ्वीराज चौहान 11 वर्ष की आयु में शासक बने
- पृथ्वीराज चौहान के नाना अनंगपाल तोमर ने दिल्ली में लालकोट किले का निर्माण कराया, इस किले को पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने मोहम्मद गौरी से जीतकर इसका नाम पिथौरागढ रख दिया था

● भंडारको का दमन – 1182 ई

- मथुरा – भरतपुर के क्षेत्र में पृथ्वीराज ने इनका दमन किया

● महोबा विजय – 1182 ई

- महोबा (उत्तर प्रदेश) के चंदेल शासक परमार्दिदेव के वीर सेनापति आल्हा – उदल (भाई) को पृथ्वीराज चौहान ने युद्ध में मार दिया
- पृथ्वीराज ने 'पंजुनराय कछवाह' को महोबा का उतराधिकारी नियुक्त किया

● चालुक्यों पर विजय – 1184 ई

- गुजरात के चालुक्यों और अजमेर के चौहानों के बीच लंबे समय से संघर्ष चल रहा था
- पृथ्वीराज रासो के अनुसार पृथ्वीराज ने आबू राजकुमारी इच्छिनी से विवाह कर लिया जिससे गुजरात के चालुक्य शासक भीमदेव द्वितीय नाराज हो गये
- भीमदेव द्वितीय के प्रधानमंत्री जगदेव प्रतिहार व पृथ्वीराज की सेना के मध्य नागौर का युद्ध हुवा, बाद में संधि हो गई

● कन्नौज –

- कन्नौज (उत्तर प्रदेश) के शासक जयचंद गढवाल की पुत्री संयोगिता से पृथ्वीराज ने गंधर्व विवाह किया

● तराईन का प्रथम युद्ध – 1191 ई

- तराईन वर्तमान में करनाल (हरियाणा) में है
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मुहम्मद गोरी के मध्य युद्ध हुवा जिसमें पृथ्वीराज चौहान जीत गये।
- पृथ्वीराज चौहान के दिल्ली सामंत गोविंदराज ने मुहम्मद गौरी का दांत तोड़ दिया
- मुहम्मद गौरी गजनी भाग गया, पृथ्वीराज ने पीछा नहीं किया

● तराईन का द्वितीय युद्ध – 1192 ई

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मुहम्मद गोरी के मध्य हुवा पृथ्वीराज चौहान हार गये
- भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुवी
- पृथ्वीराज चौहान को सिरसा के पास बंदी बना लिया गया
- पृथ्वीराज रासो की अनुसार मुहम्मद गोरी पृथ्वीराज को गजनी ले गया जहाँ चन्दबरदाई ने एक दोहा बोला और शब्दभेदी बाण से पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी को मार दिया

"चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूकी चौहान"

❖ महत्वपूर्ण बिन्दू –

- मुहम्मद गौरी भारत में मुस्लिम सम्राज्य का संस्थापक बना
- पृथ्वीराज चौहान को अंतिम हिन्दू सम्राट कहा जाता है
- पृथ्वीराज चौहान ने चारो ओर दुश्मनो का खात्मा कर दलपंगूल (विश्वविजेता) की उपाधि धारण की, इनकी अन्य उपाधि रायपिथौरा भी है
- पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चन्दबरदाई, जयानक, विघापति गौड, वागीश्वर जनार्दन, आशाधर, विश्वरूप थे
- पृथ्वीराज रासो ग्रंथ (पिंगल भाषा में) चंदबरदाई ने लिखा, इस ग्रंथ को चंदबरदाई के पुत्र जल्हण ने पूरा किया

नोट – चन्दबरदाई का मूल नाम –पृथ्वी भट्ट वल्लादी था

- पृथ्वीराज विजय ग्रंथ (संस्कृत भाषा में)– जयानक ने लिखा
- पृथ्वीराज चौहान के घोड़े का नाम – नाट्यरम्भा था
- पृथ्वीराज की छतरी – काबुल (अफगानिस्तान)
- पृथ्वीराज का स्मारक – तारागढ़ (अजमेर)

रणथम्भौर के चौहान

❖ गोविंदराज चौहान – 1194 ई

- पृथ्वीराज चौहान के पुत्र
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने रणथम्भौर की जागीर दे दी
- रणथम्भौर के चौहान वंश का संस्थापक

❖ वीरनारायण –

- इल्लतुतमिश से संघर्ष हुआ जिसमें इनकी मृत्यु हो गयी

❖ वागभट्ट –

- दिल्ली सल्तनत की रजिया सुल्तान के रणथम्भौर आक्रमण को विफल किया

❖ जैत्रसिंह –

- नासीरूदीन के रणथम्भौर आक्रमण को विफल किया

❖ हम्मीर देव चौहान (1282–1301 ई) –

- रणथंबोर चौहान शासकों में सबसे प्रतापी शासक
- विजय अभियान के लिए कोटियजन यज्ञ का आयोजन कराया जो पंडित विश्वरूप की देख–रेख में हुआ
- मेवाड शासक समरसिंह को पराजित किया
- दिल्ली शासक जलालुद्दीन खिलजी ने 1290 ई में झाईन दुर्ग पर आक्रमण किया और झाई दुर्ग को जीत लिया
- झाई दुर्ग की रक्षा करते हुए गुरुदास सैनी मारा गया
- रणथंभौर दुर्ग पर जलालुद्दीन खिलजी ने दो बार 1291–92 में आक्रमण किया लेकिन दुर्ग जीत नहीं पाये तब कहा – ऐसे 10 दुर्गों को मे मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता
- इस अभियान का वर्णन अमीर खुसरो की रचना 'मिफ्ता उल फुतूह' व जियाउदीन बरनी की पुस्तक 'तारीख ए फिरोजशाही' में है
- हमीर देव ने 17 युद्ध लड़े थे, 16 जीते थे

● अलाउद्दीन के आक्रमण का कारण –

- हम्मीर देव चौहान ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह व केहब्रू (भाई) को शरण दी
- गुजरात अभियान के समय मुहम्मद शाह सारा धन लेकर हम्मीर देव चौहान के पास चला गया था
- हम्मीर हठ के अनुसार मुहम्मदशाह को अलाउद्दीन खिलजी की बेगम चिमना से प्रेम हो गया था और दोनों मिलकर अलाउद्दीन को मारना चाहते थे

● अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण –

- जब हम्मीर ने मुहम्मद शाह को लौटाने से मना कर दिया तो अलाउद्दीन खिलजी ने उलगू खा और नूसरत खा के नेतृत्व में सेना भेजी
- इस सेना ने झांई दुर्ग पर अधिकार कर लिया
- हम्मीर देव चौहान ने अपने दो सैनिक अधिकारी भीमसिंह व धर्मसिंह को भेजा
- अलाउद्दीन की सेना को पराजित कर धर्मसिंह रणथंभौर की ओर लौट गया, भीमसिंह को मार दिया
- हम्मीर देव चौहान ने भीमसिंह की मृत्यु के लिए धर्मसिंह को उत्तरदायी ठहराया
- हम्मीर ने धर्मसिंह को हटाकर सेनापति उसके भाई भोज को नियुक्त किया बाद में हम्मीर देव ने भोज को भी निकाल दिया जो अलाउद्दीन के पास चला गया और रणथंभौर पर आक्रमण करने के लिए कहा

● अलाउद्दीन खिलजी की सेना का आक्रमण –

- अलाउद्दीन ने रणथंबोर पर आक्रमण करने के लिए अपने दो सेनापति उलगू खा और नूसरत खा को भेजा
- हम्मीर की सेना ने नूसरत खा को मार दिया

● अलाउद्दीन खिलजी का आना –

- अमीर खुसरो (रचना – खजाईन उल फुतूह / तारीख ए अलाई) भी साथ आया था जिसने युद्ध का आँखों देखा वर्णन किया है
- अलाउद्दीन ने लगभग एक वर्ष तक रणथंभौर दुर्ग में घेरा डाले रखा जिसके कारण दुर्ग में खाद्य सामग्री का अभाव होने लगा
- अमीर खुसरो कहता है– 'सोने के 2 दोनों के बदले चावल का दाना भी नसीब नहीं हो रहा था'
- अलाउद्दीन ने हम्मीर देव के सेनापति रणमल – रतिपाल को दुर्ग देने का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया

● साका – 11 जुलाई 1301

- हम्मीर देव की पत्नी रंगदेवी व पुत्री देवलदे ने रणथंभौर दुर्ग में स्थित पदमला तालाब में कूदकर जौहर किया
- हम्मीर देव चौहान ने केसरिया किया
- राजस्थान का प्रथम साका व एकमात्र जल ज़ोहर
- मुहम्मद शाह भी हम्मीर की तरफ से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ
- रणथम्भौर विजय के बाद अमीर खुसरो लिखता है – आज क्रुफ का घर इस्लाम का घर हो गया
- अलाउद्दीन खिलजी ने दुर्ग उलगू खा को सौंप दिया
- बिजादित्य नामक कवि हम्मीर के दरबार में था

> नोट – हमीर देव ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षों के शासन की याद में रणथंभौर दुर्ग में 32 खम्भों की छतरी बनायी जिसे न्याय की छतरी कहते हैं

- हम्मीर देव चौहान के लिए कहते है–

"सिंह सवन सत्पुरूष वचन, कदली फलै एक बार
तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढै ना दूजी बार"

ग्रंथ	लेखक
हम्मीर महाकाव्य	नयन चन्द्र सूरी
हम्मीर रासो	शारंगधर (14 वी सदी में संस्कृत भाषा)
हम्मीर रासो	जोधराज (18 वी सदी में अहीरवाटी में)
हम्मीर हठ	चंद्रशेखर
सुर्जन चरित्र	चंद्रशेखर
हम्मीर बंधन	अमृत कैलाश
हम्मीरायण	भांडऊ व्यास

नाडोल के चौहान

- शाकंभरी के चौहानो के बाद यह प्रथम चौहान राज्य था
- संस्थापक – लक्ष्मण चौहान – 960 ई (शाकम्भरी नरेश वाक्पति राज का पुत्र था)
- नाडोल शाखा के कीर्तिपाल चौहान ने मेवाड़ शासक सामतसिंह को पराजित कर मेवाड़ को अपने अधीन किया
- बाद में नाडोल के चौहान जालौर के चौहानों में विलीन हो गये थे

जालौर के चौहान

- संस्थापक – कीर्तिपाल चौहान – 1181 ई.
- कीर्तिपाल चौहान ने जालौर को परमारो से छीनकर अपने अधिकार में ले लिया
- प्राचीन शिलालेखों में जालौर का नाम जाबालिपुर व किले का नाम सुवर्णगिरी मिलता है
- सोनगढ़ पर्वत से ही इस शाखा का नाम सोनगरा चौहान पड़ा था

❖ चाचिगदेव –

- नासीरूद्दीन महमूद तथा बलबन का समकालीन था फिर भी दिल्ली के किसी भी सुल्तान ने इनके ऊपर आक्रमण नहीं किया

❖ कान्हडदेव चौहान (1305 – 1311 ई) –

- कान्हडदे प्रबंध ग्रंथ (रचियता – पद्‌मनाभ – जालौर के शासक अखयराज का दरबारी) के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात विजय के लिए रास्ता मांगा लेकिन कान्हडदेव ने मना कर दिया
- मुहणौत नैंणसी के अनुसार कान्हडदेव का पुत्र वीरमदेव अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में गया तो अलाउद्दीन की पुत्री फिरोजा ने वीरमदेव को शादी करने के लिए कहा परंतु वीरमदेव ने मना कर दिया

● अलाउद्दीन खिलजी का सिवाणा अभियान –

- 2 जूलाई 1308 ई
- सेनापति – सातलदेव (कान्हडदेव का भतीजा)
- देशद्रोही भावला पंवार ने किले के पानी में गोमांस मिलाकर अपवित्र कर दिया
- अभियान में अलाउद्दीन खिलजी के सेनानायक नाहरखां तथा भोज मारे गये
- सातलदेव के नेतृत्व में केसरिया हुआ
- महिलाओं ने जोहर किया
- अलाउद्दीन खिलजी ने विजय के बाद सिवाणा दुर्ग का नाम खैराबाद रखा और दुर्ग कमालुद्दीन गुर्ग को सौंप दिया

● जालौर अभियान - 1311 ई

- कान्हडदेव के सेनापति दहिया बीका ने शत्रु सेना को जालौर दुर्ग तक पहुचने का सुरक्षित मार्ग बता दिया
- कान्हडदेव व उसका पुत्र वीरमदेव सोनगरा युद्व करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए
- कान्हडदेव की रानी जेतलदेव के नेतृत्व में महिलाओ ने जौहर किया
- अलाउद्दीन खिलजी ने जालोर दुर्ग का नाम जलालाबाद रखा
- इस युद्व का वर्णन पद्मनाभ के ग्रंथ – वीरमदेव सोनगरा री बात व हम्मीरायण में भी मिलता है।

> नोट – कान्हडदेव के भाई मालदेव सोनगरा ने अलाउदीन की अधीनता स्वीकार कर ली जिसे बाद में चितौड किले का भार सौंपा गया

सिरोही के चौहान

- प्राचीन साहित्य में सिरोही का नाम – अबूर्द प्रदेश
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार सिरोही का मूल नाम– शिवपुरी
- पुराना नाम – सरणवाही भी मिलता है
- प्रारंभ में आबू में परमारों का शासन था जिसका संस्थापक धूमराज था जिनकी राजधानी चंद्रावती थी
- बाद में सहसमल ने सिरोही नगर की स्थापना की

❖ लुम्बा चौहान –

- सिरोही की देवड़ा शाखा का संस्थापक / आदि पुरुष
- 1311 ई के लगभग आबू और चंद्रावती को परमारो से छीनकर देवडा शाखा की स्थापना की

> देवडा चौहानो के कुलदेव – सारणेश्वर महादेव

❖ अखैराज देवड़ा –

- उपनाम – उड़ना अखैराज
- 1527 के खानवा युद्ध में महाराणा सांगा का साथ दिया

❖ सुरतान देवडा –

- दत्ताणी के युद्व (अक्टूबर 1583) में महाराणा प्रताप के भाई जगमाल को मार दिया था

❖ शिवसिंह –

- 11 सितम्बर 1823 में ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ संधि करने वाली राजस्थान की अंतिम रियासत बनी

बूंदी के चौहान

- कुंभाकालीन लेख में बूंदी का नाम – वृन्दावती

❖ देवीसिंह हाडा –

- बूंदी के मीणा शासक जैता को पराजित कर बूंदी राज्य की स्थापना की

❖ राव सुर्जन हाडा –

- अकबर चित्तौड़ का किला जीतकर रणथंभौर के चारों ओर घेरा डालता है उस समय सुर्जन हाडा ने 1569 में अकबर से संधि की
- अकबर ने राव राजा की उपाधि दी तथा 5000 का मनसब बनाया
- सूर्जन हाडा के कहने पर कवि चन्द्रशेखर ने 'सूर्जन चरित्र' ग्रंथ की रचना की

❖ राव रनतसिंह हाडा –

- जहांगीर ने 5000 का मनसबदार बनाया तथा इनके न्याय के कारण इनको 'रामराज' व चित्रकला प्रेमी होने के कारण 'सर बुलन्द राय' की उपाधि दी

❖ राव शत्रुसाल (छत्रसाल) हाडा –

- केशोरायपाटन (बूंदी) में केशवराय मंदिर बनाया
- बूंदी किले में रंगमहल का निर्माण कराया

❖ अनिरुद्ध हाडा –

- इनके शासनकाल में 1683 से 1695 ई में देवपुरा गाँव (बूंदी) में 84 खंभों की छतरी का निर्माण राव देवा ने कराया
- इनकी पत्नी नाथावती ने 1699 ई में बूंदी में रानी जी की बावड़ी का निर्माण अपने पुत्र बुद्धसिंह के काल में कराया
- इनका पुत्र जोधसिंह हाडा जैतसागर तालाब (बूंदी) में गणगौर के अवसर पर रानियों और गणगौर की प्रतिमा के साथ डूब गया था इसलिए कहावत प्रसिद्ध है –

  '' हाडो ले डूब्यो गणगौर''

❖ राव बुद्धसिंह –

- नेहतरंग ग्रंथ की रचना की
- इनके समय मुगल बादशाह फर्रूखशियर ने बूंदी का नाम फर्रूखाबाद रखा
- बुद्धसिंह की कच्छावा रानी अमर कुंवरी ने अपने पुत्र उम्मेद सिंह के पक्ष में राखीबंध भाई मराठा सरदार मल्हार राव होल्कर को बुलाया
- सवाई जयसिंह ने दलेल सिंह को शासक बना दिया था
- राजस्थान में सर्वप्रथम (18 अप्रेल 1734) मराठों का प्रवेश बूंदी से हुआ

❖ उम्मेद सिंह –

- उम्मेद सिंह के पास हुन्जा नामक घोड़ा था
- तारागढ़ किला (बूंदी) में चित्रशाला का निर्माण कराया

❖ विष्णु सिंह –

- 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि की

❖ बहादुर सिंह –

- बूंदी के अंतिम शासक

कोटा के चौहान

- कोटिया भील के नाम पर कोटा नाम पड़ा
- कोटा का पुराना नाम – नंदग्राम
- कोटा प्रारंभ में बूंदी रियासत का ही भाग था यहा हाडाओ का शासन था
- 1631 में शाहजहा ने बूंदी नरेश रतनसिंह के पुत्र माधोसिंह (कोटा का संस्थापक) को कोटा दे दिया

● मांगरोल का युद्ध – 1821

- कोटा महाराव किशोरसिंह द्वितीय व झाला जालिम सिंह (कोटा के फौजदार / प्रशासक) के मध्य कोटा की प्रशासनिक शक्तियो को लेकर बांरा के पास मांगरोल का युद्ध हुवा जिसमें अग्रेंजो ने जालिम सिंह का साथ दिया
- जालिम सिंह युद्ध जीतने के बाद कोटा प्रशासन का सर्वेसर्वा बन गया
- 1838 में झाला मदन सिंह (जालिम सिंह का पोता) को अंग्रेजो ने कोटा रियासत के 17 परगने देकर झालावाड रियासत बना दी जिसकी राजधानी झालरापाटन रखी

नोट – अंग्रेजो द्वारा बनाई गई राजस्थान की अंतिम रियासत झालावाड थी